Q.No→ मिश्रित अर्थव्यवस्था से क्या समझते हैं? इसके गुण - दोषों का वर्णन करें?

उत्तर

आर्थिक संगठन का सर्वाधिक प्राचीन स्वरूप पूँजीवादी था और कालान्तर में इसके प्रतिक्रियास्वरूप समाजवाद का प्रादुर्भाव हुआ। समाजवाद ने पूँजीवाद के दोषों का निराकरण तो कर दिया लेकिन इसकी अच्छाईयों को कोई स्थान नहीं दिया। अतएव समाजवादी अर्थव्यवस्था भी दोष-मुक्त सिद्ध नहीं हो सकी। अतएव 20 वीं शताब्दी में समाजवादी और पूँजीवादी अर्थव्यवस्थाओं की अच्छाईयों को अपनाते हुए इनके दोषों का निराकरण करते हुए एक समन्वयकारी व्यवस्था का प्रादुर्भाव हुआ, इसे ही मिश्रित अर्थव्यवस्था की संज्ञा दी जाती है।

* मिश्रित अर्थव्यवस्था के गुण :—

(i) पर्याप्त मात्रा में आर्थिक स्वतंत्रता → मिश्रित आर्थिक व्यवस्था में सरकारी परोक्ष नियंत्रण के बावजूद पर्याप्त मात्रा में आर्थिक स्वतंत्रता पायी जाती है। उदाहरण के लिए, इसमें उपभोक्ता को अपनी आय स्वतंत्र रूप से खर्च करने का अधिकार प्राप्त होता है। सरकार अपव्ययपूर्ण तथा हानिकारक व्यय को परोक्ष रूप से रोकने का प्रयास अवश्य करती है। इसी प्रकार, इस अर्थव्यवस्था में लोगों को अपने व्यवसाय को चुनने की स्वतंत्रता भी पर्याप्त मात्रा में विद्यमान रहती है।

(ii) निजी सम्पत्ति, मूल्य-यंत्र तथा लाभ के उद्देश्यों की विद्यमता → वर्तमान मिश्रित अर्थव्यवस्था में, मूल्य-यंत्र ज्यों-का-त्यों रहता है। इससे अर्थव्यवस्था के संचालन में सुविधा रहती है। इसी प्रकार इसमें निजी सम्पत्ति तथा लाभ का उद्देश्य भी वर्तमान रहता है जिससे उत्पादकों और उद्यमियों को कठिन परिश्रम तथा अपनी कुशलता में वृद्धि के लिए पर्याप्त मात्रा में प्रोत्साहन प्राप्त होता है।

(iii) आयोजित एवं तीव्र आर्थिक विकास → इस प्रणाली में आयोजित तरीके से आर्थिक विकास का प्रयास किया जाता है। नियोजन के अन्तर्गत पहले देश के सम्पूर्ण साधनों का अच्छे ढंग से सर्वेक्षण किया जाता है, निजी तथा सार्वजनिक क्षेत्र का कार्य-क्षेत्र निर्धारित किया जाता है तथा उत्पादन के साधनों का कुशलतम प्रयोग किया जाता है। इससे देश का आर्थिक विकास तीव्र गति से होता है।

(P.T.O.)

Scanned with CamScanner

(iv) आर्थिक विषमता में कमी → इस व्यवस्था में सरकार विभिन्न प्रयत्नों द्वारा आर्थिक विषमता को कम करने का प्रयास करती है। इसके लिए कई प्रकार के उपाय अपनाये जाते हैं, जैसे – धनिक व्यक्तियों से अधिक मात्रा में आय-कर एवं मृत्यु कर लिया जाता है तथा निर्धनों के लिए मुफ्त चिकित्सा, शिक्षा तथा सामाजिक सुरक्षा की व्यवस्था की जाती है। इसके साथ ही सरकार एकाधिकारी व्यक्तियों तथा पूँजीपतियों को नियंत्रित करने का भी प्रयास करती है, जिससे उपभोक्ता वर्ग का शोषण नहीं हो तथा धन एवं आय के वितरण में विषमता भी न हो।

दोष :—

(i) मिश्रित अर्थव्यवस्था का अन्त → ऐसा कहा जाता है कि मिश्रित अर्थव्यवस्था अधिक समय तक कायम नहीं रह सकती है और अंतत: यह समाप्त हो जाती है। उदाहरण के लिए, मिश्रित अर्थव्यवस्था में सार्वजनिक क्षेत्र का इतना अधिक विस्तार हो सकता है जिससे निजी क्षेत्र का अस्तित्व ही समाप्त हो जाय। इसके विपरीत इसमें निजी क्षेत्र का भी अत्यधिक विस्तार हो सकता है जिससे सार्वजनिक क्षेत्र के मार्ग में बाधाएँ उत्पन्न हो सकती हैं। इन दोनों परिस्थितियों में मिश्रित अर्थव्यवस्था अधिक समय तक कायम नहीं रह सकती।

(ii) अकुशलता का उदय → मिश्रित अर्थव्यवस्था में अकुशलता का भी उदय होता है। इसमें अत्यधिक सरकारी हस्तक्षेप के कारण निजी क्षेत्र में स्वतंत्रता एवं प्रेरणा की कमी हो सकती है जिससे अकुशलता का उदय होता है। सार्वजनिक क्षेत्र में भी अकुशलता का जन्म होता है क्योंकि इसे चलाने के लिए प्राय: कुशल प्रशासकों एवं कर्मचारियों का अभाव होता है।

(iii) आर्थिक अस्थायित्व → मिश्रित अर्थव्यवस्था में समुचित नियंत्रण के अभाव में निजी क्षेत्र के उद्योग आन्तरिक एवं बाह्य बाजार की शक्तियों की चपेट में आ सकते हैं। इससे निजी क्षेत्र के उद्योगों में अस्थायित्व अथवा उथल-पुथल होना अवश्यम्भावी है।

इस प्रकार मिश्रित अर्थव्यवस्था में अनेक दोष पाये जाते हैं, लेकिन उचित नीति द्वारा इन दोषों को दूर किया जा सकता है। वर्तमान समय में सभी मिश्रित अर्थव्यवस्था के प्रति आशावादी हैं क्योंकि यह पूँजीवाद एवं समाजवाद के बीच एक प्रकार का समझौता है।

—o—

Scanned with CamScanner